VIMS-1
Veda and Science: An Analysis in the light of Brahma Cult
वेद और विज्ञान : ब्रह्मा पंथ के प्रकाश में एक विश्ले ण

कृश्ण मूर्ति राजू
भौतिकी विभाग
ब्रह्मानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राठ , हमीरपुर – 210 431 , उ0 प्र0, भारत

ब्रह्मा वैदिक सभ्यता के सबसे प्राचीन देवता है । भारतीय परंपराओं में उन्हें सर्वोच्च रचयिता देवता माना जाता है । वे ही वेदों के जनक हैं। इस प्रकार ब्रह्मा, वेद का मूल हैं और वेद सभी विज्ञानों एवं ज्ञानों का मूल है । वेदों में आधुनिक विज्ञान बीज रूप में विद्यमान है किंतु सामान्य व्यक्ति द्वारा वेद को न समझ पाने के कारण अवैदिक शिक्षाओं और लेखन का जन्म हुआ और वेद महत्वहीन होते गये. । वास्तव में वैदिक धर्म और विज्ञान को परस्पर प थक नहीं किया जा सकता । यदि कोई सच्चा विज्ञान समझना चाहता है तो उसे वेदों की ओर ही देखना होगा क्योंकि वैदिक मार्ग ही मानवता के हित को सुनिश्चित करता है । वैदिक द ि ट में और सार्वभौम वैज्ञानिक नियमों में समरसता है । इस प्रपत्र में वेद के जनक ब्रह्मा, वेद और आधुनिक विज्ञान, भौतिकी की द ि ट में यज्ञ तथा ब्रह्मा–अनुयायियों की वैज्ञानिक प्रव त्ति वि ायों पर चर्चा की जायेगी ।

1. प्रस्तावना :

वेद प थ्वी भर के अत्यन्त प्राचीन और सम्माननीय पवित्र ग्रंथ हैं, वे आर्य सभ्यता के द्योतक और हिन्दू धर्म के प्रमाणिक पथ प्रदर्शक हैं । इतने महत्वपूर्ण वेद अब तक भी सर्वसाधारण के लिये परम गोपनीय, गहन और अज्ञेय बने हुये हैं । भारतीय संस्क ति और साधना का मूल होने के बावजूद भी जगत का आदिमतम यह ग्रंथ भाव और भा ा में आज भी दुरवगाह बना हुआ है । अंतर्बोध के इस प्रकाश को बुद्धि द्वारा पकड़ने की सभी कोशिशें व्यर्थ सिद्ध हुई हैं । विदेशी विद्वानों में ही नहीं बल्कि शिक्षित भारतीयों में भी, यह एक प्रचलित धारणा है कि वेद, उपनि ाद व दर्शन आदि ग्रंथों में वर्णित हमारी धरोहर मुख्यतः धर्म एवं दर्शन से संबधित है । इनके अनुसार इन ग्रंथों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का उल्लेख नगण्य है । जबकि वास्तविकता यह है कि वेदादि ग्रंथों में आधुनिक विज्ञान अपनी पूर्ण आभा के साथ विद्यमान है । वेदों में आधुनिक विज्ञान बीज रूप में उपस्थित है किंतु सामान्य व्यक्ति द्वारा वेद को न समझ पाने के कारण अवैदिक शिक्षाओं और लेखन का जन्म हुआ और वेद उपेक्षित होते गये । वास्तव में वेद और विज्ञान को परस्पर प थक नहीं किया जा सकता । वैदिक द ि ट में और सार्वभौम वैज्ञानिक नियमों में अद्भुत समानता है । यदि कोई सच्चा विज्ञान समझना चाहता है तो उसे वेदों की ओर ही देखना होगा क्योंकि वैदिक मार्ग ही मानवता के हित को सुनिश्चित करता है ।

2. वेद के जनक ब्रह्मा :

ब्रह्मा वैदिक सभ्यता के सबसे प्राचीन देवता है । भारतीय परंपराओं में उन्हें सर्वोच्च रचयिता देवता माना जाता है । वेद की उत्पत्ति प्रजापति ब्रह्मा से बताई गई है । अग्नि, वायु, आदित्य ही संवत्सर प्रजापति है । अग्नि पिण्ड भाव में आकर छंद रूप में परिवर्तित होकर ऋग्वेद बनता है । वायु गति भाव में आकर रस रूप में यजुर्वेद बन जाता है । आदित्य तेजो भाव में आकर वितान रूप में परिणत होकर सामवेद बन जाता है । इस प्रकार ब्रह्मा जी से वेद उत्पन्न होते हैं । वेद ब्रह्मा का ज्ञान स्रोत अथवा ज्ञान राशि है । इसे हम ब्रह्म विधान भी कह सकते हैं । इस प्रकार ब्रह्मा, वेद का मूल हैं और वेद सभी विज्ञानों एवं ज्ञानों का मूल है । परमात्मा के विधान के साथ एकात्मता का स्वरूप ही वेद है । जैसे विधाता को विधान से प थक नहीं किया जा सकता उसी प्रकार ब्रह्मा को वेद से अलग करना संभव नहीं है । विधाता जैस नित्य है, उसका विधान भी उसी प्रकार नित्य है ।

भास्त्रों में वेद से स्रश्टि की उत्पत्ति का उल्लेख हुआ है ।दूसरी ओर स्रश्टि के उत्पत्तिकर्ता ब्रह्मा हैं ; ऐसा उपनिशदों में बारम्बार कहा गया है। वस्तुतः वेद और ब्रह्म (या ब्रह्मा) भाब्द समान अर्थ में प्रयुक्त हुये हैं। इसीलिये जैमिनी ब्राह्मणोपनिशद कहता है– वेदो ब्रह्मा (जै0 ब्रा0 4/11/9/3)। वेदों को अनन्त भी कहा गया है– अनन्ता वै वेदाः (तै0 ब्रा0 3/10/11/3)। आचार्य सायण (ऋग्वेदादि भाश्य भूमिका पृ0 25) के अनुसार वेद का अर्थ है– सत्ता, ज्ञान और आनन्द। यह ब्रह्मा के सच्चिदानन्द स्वरूप के ही अनुरूप है। अतः वेद को यदि स्रश्टि का मूल माना गया है तो कोई आ चर्य की बात नहीं क्योंकि यह आदि देव ब्रह्मा ही समस्त स्रश्टि का मूल है– ब्राह्मणः प्रजाः प्रजायंते। परमात्मा की अभिव्यक्ति करने वाले पुरू ा का वर्णन ऋ0 (10/90) में प्राप्त होता है । इसी को हिरण्यगर्भ (ऋ 10/21/1) तथा प्रजापति (तै0 ब्रा0 2/2/5/3 एवं ात0 6/2/1/23/1) का स्वरूप बताया गया है ।वही ब्रह्मा है।अतः वेद को जानने से पहले उसके कर्ता को जान लेना उपयुक्त है।वस्तुतः वेदांत का ब्रह्म ही बाद के युगों में ब्रह्मा के नाम से उल्लिखित हुआ है। सारे वि व का कारण रुप वही है। वेद में उस एक की वि ाद चर्चा हुई है।वास्तव में वेद अद्वैत (एक) का ज्ञान कराने वाले ग्रंथ हैं। अद्वैत तर्क गम्य न होकर अनुभव गम्य है । तर्क के लिये कम से कम साधन और साध्य तो चाहिये, जहां द्वैत है ही नहीं वहां साधन और साध्य अलग – अलग कैसे रह सकते हैं ? यदि साधन साध्य दो नहीं हैं तो अनुमान ही कैसे होगा ? अनुमान का क्षेत्र व्यवहार है, क्योंकि वहां द्वैत है,परमार्थ में अद्वैत है । अतः वहां योगज प्रत्यक्ष अथवा श्रुति प्रमाण की ही गति है, अनुमान अथवा तर्क की नहीं । इंद्रियज प्रत्यक्ष का तो प्रश्न ही नहीं है –

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते । एनं विदन्ति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता ।।

यही वेद की वेदता है ।जिसे समझने के लिये " दिवीव चक्षुराततम् " (ऋ0 1/22/20)की जरुरत पडती है ।वेद का ऋशि वेद वाणी (ऋ0 10/71/4) को साधारण नहीं मानता प्रत्युत यह मानता है कि उसमें गहरे रहस्य छिपे हैं ।उस छिपे हुये रहस्य को उद्घाटित करके ही मानव कृतकृत्य हो सकता है ।

3. वेद और विज्ञान :

यह समझना जरूरी है कि क्यों व किस रूप में वेद का हमारे विज्ञान से सम्पर्क हैं । यजुर्वेद में विद्या (वेद) और अविद्या (विज्ञान) के समन्वय पर बल दिया गया है–"विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। अविद्यया म त्युं तीर्त्वा विद्ययाम त म नुते।" ज्ञान और विज्ञान के इस अविनाभाव संबन्ध को आधुनिक काल में इस प्रकार प्रकट किया गया है कि विज्ञान का कार्य विश्ले ाण है, ज्ञान का सं लेशण और ये दोनो एक दूसरे के बिना अधूरे हैं । अतः वेद व विज्ञान दोनों ही आदरणीय हैं ।

विशि ट ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है ।'वेद' ज्ञान है, उसका विस्त त ज्ञान विज्ञान है । तै0 उप0 के अनुसार (8/5/1) 'विज्ञान' का तात्पर्य यज्ञ का विस्तार करना है । सहस्त्राब्दियो पूर्व वेद के ऋ ि ने स्र ि ट, ज्ञान, चैतन्य, देव, प्राण, मन, काम, वाक, वायु, आदित्य आदि की जो अवधारणायें जिस विवेचन के साथ प्रस्तुत की हैं उन्हीं की गूंज आइंस्टीन, श्रोडिंगर, फ्रिटजोफ कापरा आदि नवीन भौतिक विज्ञान के विवेचकों के अधुनातन प्रत्ययों में सुनाई देती है ।

वर्तमान काल में अनेक प्रसिद्ध वैज्ञानिक कथानक ैली

Vijnana Bharati

में अपने उन मंतव्यों को प्रकट करते हैं जिन्हें पारिभाि ाक ाब्दावली में उपस्थापित करना वे अशक्य मानते हैं । विज्ञान के क्षेत्र में भी आज परा परमाणुक (Sub-atomic) स्तर पर ऐसे अस्तित्व की चर्चा की जाती है जो अतीन्द्रिय है । हाइजेनवर्ग के ाब्दों में "इस क्षेत्र में भा ाा की समस्या वस्तुतः गंभीर है । हम परमाणु की रचना के सम्बन्ध में किसी प्रकार कुछ कहना चाहते हैं, किंतु परमाणु के सम्बन्ध में दैनिक व्यवहार की भा ाा में कुछ नहीं कहा जा सकता ।" डा0 फ्रिटजॉफ कापरा स्प ट करते हैं," इस स्तर पर पदार्थ सम्बन्धी ज्ञान सीधा ऐन्द्रिक अनुभव से नहीं आता । अतः सामान्य भा ाा जो इंद्रिय गोचर जगत से ही बिम्ब ग्रहण करती है, प्रतीति में आने वाली स्थिति का वर्णन करने के लिए पर्याप्त नहीं रहती । "भा ाा सम्बन्धी यह कठिनाई वेद के सम्मुख भी है, क्योंकि उसे भी अतीन्द्रिय अनुभवों को व्यक्त करना है । वेद इस कठिनाई का समाधान प्रतीकात्मक भा ाा का सहारा लेकर करता है । वेद का अश्व, गौ, वृत्र, सोम आदि प्रतीक तथा वृत्र–इंद्र, उर्वशी–पुरूरवा, यम–यमी और ाुनः ोप इत्यादि आख्यान अपने भीतर किन्हीं रहस्यमयी वैज्ञानिक घटनाओं और तथ्यों को समेटे हुये हैं । अतः इनके रहस्यों को उद्घाटित करके ही वेद के वास्तविक आशय को समझा जा सकता है । वेद की इस प्रतीकात्मक भौली के कारण ही भायद कहा गया है कि देवता परोक्ष प्रिय होते हैं (गोपथ0 1/2/21)।

वेद और विज्ञान की बात कहने की ाैली बहुधा भिन्न है, किन्तु वक्तव्य वि ाय में प्रायः समानता है । सावधानी पूर्वक विश्ले ाण करने पर वेद तथा विज्ञान के मध्य पर्याप्त संपर्क सूत्र मिलते हैं । परीक्षा द्वारा अपरोक्ष ज्ञान पाने में ही विज्ञान का आग्रह है एवं लक्ष्य को स्थिर रखकर पथ को सीधा कर लेने भर से यह वेद का पथ हो सकता है । वेद व विज्ञान के बीच एक बहुत घनि ठ प्रकार की आत्मीयता है यह बात भूलनी नहीं चाहिये । वास्तव में आधुनिक विज्ञान ने बहिर्मुख प्रेक्षणों के द्वारा जिन तथ्यों को जाना है । प्राचीन प्रज्ञान ने अन्तर्मुख साधना में समीक्षा – अन्वीक्षा का आधार लेकर उन्हीं तथ्यों को ओर भी गहरे धरातल में पाया था और उसी सारी साक्षात अपरोक्ष ज्ञानराशि को ही वेदवाणी के रूप में ऋ िगण प्रकाशित करके रख गये है ।

यद्यपि वेद ने अपने गूढ़ रहस्यों को समझाने के लिये सदा ही उपमानों और प्रतीकों का सहारा लिया है परन्तु यह सदैव स्मरण रखना चाहिये कि वेद का सहज प्रतिपाद्य वि ाय ब्रह्म है, प्रक ति के रहस्यों का उद्घाटन आनु ांगिक ही होता है । जिस विचार के चारों ओर ो ा सब केन्द्रित है वह है सत्य, प्रकाश, अमरत्व की खोज । ऋ ियों ने इसीलिये हम लोगों से कुछ ऐसा जानने के लिये कहा है जिसे जानने पर 'सर्वमिदं विज्ञातं भवति' (मुण्डक0 1/1/3)।कठ श्रुति ने जिसे ारीर के भीतर अनुसंधान द्वारा प थक रूप से पाने का उपदेश देकर नचिकेता को 'विजरा' और 'विम त्यु' होने का उपाय बताया है (कठ0 2/3/17–18)। सब ज्ञानों की पराका ठा रूप ज्ञान का आधार एक पुरु ा विशे ा है – 'यत्र निरतिशयं सर्वज्ञत्व बीजम' (योग सूत्र 1/25)। यह पुरु ा ही वेद का केन्द्रीय विचार है ।

4. भौतिक विज्ञान की द ि ट से यज्ञ की व्याख्या :

यज्ञ अपने आप में प्रक ति और जीवन को पु ट करने का वैज्ञानिक उपाय है। वेद कालीन वैज्ञानिक उपासना ही यज्ञ है । संक्षेप में कहें तो सूर्यादि देवों का भौतिक स्रश्टि के रूप में परिणत होना तथा भौतिक स्रि ट का पुनः देवमय होना ही यज्ञ है तथा यही ब्रह्मा का स्रि ट चक्र हैं । कहा भी है – 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' (ऋ0 10/9/16) । निघण्टु (3/17) के अनुसार प्रजापति (ब्रह्मा)यज्ञ का पर्यायवाची है ।

वैदिक ग्रंथों के अनुसार ,' यज्ञ से व ि ट होती है ' और ' यज्ञाग्नि में डाली गई आहुतियां आदित्य मंडल में जाती हैं '। विज्ञान के आलोक में इसका वि लेशण करें तो विज्ञान हमें बताता है कि अग्नि में जलकर पदार्थ गैस बन कर ऊपर उठने लगे तो उसके अणु आवेशित हो जाते हैं । आकाश के धूलकणों से ये आयन चिपक जाते हैं ।यज्ञाग्नि में हवन किये गये द्रव्य के कुछ अंश गैस बन कर निकलते हैं । तीव्र ताप और रासायनिक संयोग के कारण यह गैस आवेशित होती है । अग्नि से बहुत दूर जाने एवं ठंडी होने पर भी गैस अणुओं का आवेश सुरक्षित रहता है। ये आयन धूलकणों के साथ जुटकर ऊपर जाते हैं । विज्ञान के अनुसार ये सब आवेशित कण ऊपर उठकर वायु के जल वा प को जमाकर मेघ बना देते हैं ।यही यज्ञ से व ि ट होने के रूपक की वैज्ञानिक व्याख्या है।

अब देखें कि यज्ञ की अग्नि में डाली गई आहुति आदित्य मंडल में कैसे जाती है ? अग्नि में डाला गया द्रव्य आयनित होता है । कुछ कण धनावेशित तथा कुछ ऋणावेशित होते हैं । सूर्य का आवेश धनात्मक है तथा उसकी मात्रा (voltage) भी अत्यधिक है । फलस्वरूप सूर्य ऋणावेशित कणों को अपनी ओर खींचना चाहता है । आरहीनियस आदि वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार करते है । इस प्रकार आहुत पदार्थो के ऋणायन आदित्य की ओर आकर्ि ात होंगे, इसकी बहुत संभावना है ।

तो यह है वैदिक यज्ञ के पीछे का वैज्ञानिक रहस्य । यज्ञ की अवधारणा कितनी व्यापक है इसकी झलक इन वेद मंत्रों में मिलती है –"वह कौन सा वन है ? किस व क्ष का का ट है ? जिससे धरती और आकाश का गठन हुआ है ? X X X यज्ञ के समय हे विश्वकर्मा (ब्रह्मा का एक नाम) उनके वि ाय में मुझे बतलाइये ।" (ऋ0 10.31) एवं "हमारे पिता वे ऋ ि ा हैं, जो विश्व भुवन में हवन करने बैठे थे ।" (ऋ0 10.88) आदि ।वस्तुतः यज्ञ भारतीय संस्कृति का पिता है ।यज्ञ भाब्द का अर्थ है त्याग । यही कारण है कि ऋशियों ने हमें अपने जीवन को यज्ञमय बनाने की प्रेरणा दी है ताकि हम समग्र मानवता का हित पोशण कर सकें ।वेदों में भी यज्ञ को वि व भाांति का सर्वश्रेश्ठ आधार कहा गया है ।

5. ब्रह्मा–अनुयायियों की वैज्ञानिक प्रव त्ति :

वैदिक ऋशियों की वैज्ञानिक प्रव त्ति एक सामान्य बात है, क्योंकि सभी प्रकार के ज्ञान–विज्ञान वेदों से ही प्रकट होते हैं। इस संदर्भ में ब्रह्मा के उपासकों एवं अनुयायी पुरूशों के वैज्ञानिक रूझानों पर द श्टिपात करना अत्यन्त उपयोगी होगा।यह विचारणीय है कि वैदिक युग में जब प्रयोगशालायें और उपकरण नहीं थे तब गूढ वैज्ञानिक तथ्यों का पता ऋ ि ा कैसे लगाते होंगे । इसके लिये वे तर्क ाक्ति और अनुमान प्रमाण की सहायता लेते थे। विशे ा के लिये सांख्य दर्शन (1/138–143) देखना चाहिये ।वास्तव में यह सारा जगत ही प्रयोगशाला है और मानव मन उपकरण है।

ब्रह्मा का नाम प्राचीन काल के विमान निर्माता के रूप में आता है। वेदों में हम एक पूर्ण विकसित राजनीति एवं भाासन विज्ञान का द ान पाते हैं(ऋ0 10/91/9, 8/11/1, 3/47/5 एवं अथर्व0 4/8/7, 7/86/1, 13/1/17 आदि)।ब्रह्मा के पुरुश सूक्त में ब्रह्माण्ड विज्ञान के गूढ तथ्य निहित हैं और यह सर्वोच्च ब्रह्माण्डीय ज्ञान का भण्डार है। ब्रह्मा की पंचरात्र पूजा पद्धति में पदार्थ विज्ञान के सार्वभौम वैज्ञानिक नियम दृश्टिगत होते हैं क्योंकि पंचमहाभूतों (आका ा, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी)के एकीकरण (पंचीकरण)से ही

भिन्न–भिन्न पदार्थ अस्तित्व में आते हैं। आज से लगभग चार करोड वर्ष पूर्व भगवान ब्रह्मा के निर्दे ाानुसार देवों और असुरों ने क्षीर सागर के जल को मथ कर कुछ वैज्ञानिक उपलब्धियां प्राप्त की थीं जिनमें उपग्रह के रूप में चंद्रमा की उत्पत्ति और अमृत की प्रप्ति प्रमुख है। इसी घटना में ब्रह्मा जी ने कच्छप अवतार भी ६ ाारण किया था जिसकी स्मृति स्वरूप क्षीर सागर का नाम कच्छप सागर या कैस्पियन सागर पड़ा।

वैदिक मह िर्यों ने अपनी संपूर्ण खोजों को आख्यानों में जिस अंदाज में अभिव्यक्त किया है, यह अपने आप में ाोध का एक वि ाय है । तथ्यों का वैज्ञानिक विश्ले ाण करने से सत्य स्वतः स्प ट हो जाता है । ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के वि ाय में ऋ ायों ने कहा है कि हिरण्यगर्भ वर्ण का लाल अण्ड दो भागों में टूट जाता है ।अव्यक्त को व्यक्त अवस्था में लाने वाले स्रश्टा ब्रह्मा जी का एक दिन (कल्प) ही इस पूरे ब्रह्माण्ड की कुल आयु (4,32,00,00,000 वर्श) है। इसके प चात इतने ही वर्श की प्रलय होती है जिसे ब्रह्मा की रात कहते हैं।इसमें व्यक्त पुनः अव्यक्त में लीन हो जाता है। अब जबकि बिग बैंग सिद्वान्त मान्य हो रहा है तो मह ियों द्वारा प्रतिपादित सिद्वान्त में लोगों को कुछ वैज्ञानिक झलक दिखाई देने लगी है । इसी तरह जब मह ियों ने पृथ्वी की उत्पत्ति के संबन्ध में यह कहा कि एकार्णव के जल में नारायण(ब्रह्मा का एक वैदिक नाम) की नाभि से कमल प्रकट हुआ तो लोगों ने इसे हास्यास्पद बताया किंतु जर्मनी के अलफ्रेड वेगनर ने 1912 ई0 में 'महाद्वीपीय प्रवाह सिद्वान्त' प्रतिपादित कर विश्व के वैज्ञानिकों के सम्मुख मह ियों के वैज्ञानिक ाोध–बोध को ही उजागर किया है ।

आखिर मह ियों ने किस प्रक्रिया द्वारा अनुसंधान कर प्राप्त नि कर्शो को बोधगम्य बनाया। वास्तव में वैदिक आराधना अनुसंधान करने की प्रक्रिया है । चूंकि देहस्थ पिण्ड ब्रह्माण्ड की प्रतिक ति है अतः पिण्ड में उल्टे क्रम में आराधना करने की प्रक्रिया ब्रह्मा के अनुयायियों ने खोज निकाली। सम्पूर्ण स्रश्टि स्रश्टा की भाव भाक्ति का घनीभूत स्वरूप है। इस प्रकार ऋशि पराप्रक ति का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हुये। ब्रह्म (ई वर) की खोज अब तक की सबसे बड़ी महत्वपूर्ण एवं रहस्यमयी खोज है, यद्यपि यह खोज सर्वसाधारण के लिये खूब स्पश्ट नहीं है तथापि महर्शियों ने इस खोज को अभिव्यक्त करने की पुरजोर को ा ा की है। ब्रह्म–विद्या के रुप में ब्रह्म के प्रथम उपदेश्टा ब्रह्मा जी ही थे जिन्होंने सर्वप्रथम अपने पुत्र अथर्वा को यह ज्ञान दिया था। इस प्रकार मानवों में अथर्वा इस ब्रह्म–विद्या के जानने वाले प्रथम विज्ञानी थे। इस विद्या के अन्य विद्वानों में इन्द्र ,व ि ाश्ट, याज्ञवल्क्य, ब हस्पति, भाुक्राचार्य, रावण ,हिरण्यक यप एवं वि वामित्र के नाम प्रमुख हैं।वैदिक सभ्यता के सुनियोजित प्रचार प्रसार में एवं वेदों के भाश्यकार के रुप में रावण की भूमिका वि ाश्ट महत्व रखती है।ब्रह्मा के महान उपासक वि वामित्र तो अतिप्रतिभा ााली भौतिक विज्ञानी थे जिन्होंने ब्रह्माण्ड रचना की तकनीक को खोजा था और नई स्रश्टि रच कर इसका प्रायोगिक प्रद ान भी किया था। वि वामित्र के नया संसार बनाने के प्रयोग ने तत्कालीन समाज में हलचल पैदा कर दी थी।

दे ा , काल और पदार्थ (स्पेस, टाइम एण्ड मैटर) की अवधारणायें स्रश्टिकर्ता ब्रह्मा के साथ ही प्रकट होती हैं। इसलिये उनके अनुयायियों की वैज्ञानिक चेतना और उपलब्धियां एक स्वाभाविक बात है।वास्तव में ब्रह्मा जी के उपासक वे प्राचीन रहस्यवादी थे जिन्हें ' आकल्टिस्ट ' (गुप्तविद्यावित्) कहना ज्यादा उचित है।ये ऐसे लोग थे जिनका वि वास था कि आंतर साधनों द्वारा आंतरिक ही नहीं किंतु बाह्य परिणाम भी उत्पन्न किये जा सकते हैं ।

6. उपसंहार :

यद्यपि वर्तमान में प्राचीन साहित्य से संकेतों को समझने के अभाव के कारण आधुनिक विज्ञान के ाोधबोध व सत्य का स्प टीकरण करना कठिन प्रतीत होता है किन्तु फिर भी विज्ञान एवं दर्शन के समन्वय से ही विश्व का कल्याण व विकास संभव है । प्राचीन भारतीय साहित्य में विज्ञान व प्रौद्योगिकी से संबंधित तथ्यों का उल्लेख मात्र ही पर्याप्त नहीं है,बल्कि इसका आधुनिक विज्ञान के कड़े मापदण्डों पर खरा उतरना भी आव यक है ।प्राचीन काल में विज्ञान एक कपोल कल्पना न होकर एक यथार्थ था , यह विश्वास सार्थक करने हेतु प्राच्य भारतीय विज्ञान अपनी सत्यता की सिद्धि हेतु साहसी ाोधकों की राह देख रहा है ।

संदर्भ

1. श्री अरविन्द, *वेद रहस्य (पू0 एवं उ0),* अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी, (1993)।
2. श्री अरविन्द, *भारतीय संस्क ति के आधार,* अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी, (2003)।
3. जो ी ,मोतीलाल (सं0), *यज्ञ संस्क ति और आयुर्विज्ञान,* राजस्थान प्रका ान, जयपुर, (2001)।
4. प्रत्यगात्मानन्द, स्वामी, *वेद व विज्ञान,* वि व विद्यालय प्रका ान, वाराणसी, (1999)।
5. गुरूदत्त, *सायंस और वेद,* हिन्दी साहित्य सदन, दिल्ली, (1998)।
6. दयानन्द भार्गव, *वेद विज्ञान वीथिका,* अक्षरम, सोनीपत (1996)।
7. भार्मा, बलराज ,*वेदों में विज्ञान,* वि ान चंद एंड संस ,दिल्ली।
8. झा, एस0 ,*वैदिक आरांधना अनुसंधान की प्रक्रिया है,* वेद अम त वर्श 2,अंक 18, प 0 79, मुम्बई, (2004)।
9. कैला ा एवं राजू, क श्ण मूर्ति ,*प्राचीन भारत में भौतिक विज्ञान,* स्मारिका, त तीय अखिल भारतीय विज्ञान सम्मेलन,नई दिल्ली,, प 013, फर0 19–21(2004)।
10. मिश्र, एस0 एस0 एवं कुमार, ए0 , *वैदिक विज्ञान मीमांसा,* वही, प 0 30।
11. मलिक, रीता एवं सिंह, वी0 आर0, *धर्म एवं विज्ञान,* वही प 0 51।
12. राजू, क श्ण मूर्ति, *भारतीय और पा चात्य वैज्ञानिक द श्टिकोणों की तुलना ,* (अप्रका ात)।

Vijnana Bharati